मथुरा की कला एक अध्ययन

बलराम शर्मा

प्राचीन काल से ही मथुरा विभिन्न धर्मों की उपासना स्थली रही है। यही नहीं, कला के क्षेत्र में भी विभिन्न काल-खण्डों द्वारा वहाँ के कला साधकों ने नवीन कीर्तिमान स्थापित किये। वस्तुत: भारतीय कला की मुख्य विचारधारा में मथुरा कला का योगदान अविस्मरणीय है, जिसमें मथुरा के तत्कालीन शिल्पियों ने न केवल स्वदेशी तत्वों का समवेष किया अपितु उनके विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। कुषाणकाल मथुरा मूर्तिकला का स्वर्णिम काल था। तत्कालीन युग की ब्राह्मण, जैन तथा बौद्ध प्रतिमाएं इन कलाकारों के प्रवीण कला चातुर्य का उदाहरण हैं। विभिन्न हिन्दू देवी-देवताओं की छवियों के साथ-साथ जैन तीर्थकरों तथा स्वयं बुद्ध की प्रथम मूर्ति निर्माण का श्रेय भी मथुरा की सतत कला साधना को जाता है। वास्तुकला के क्षेत्र में प्राचीन काल के अंतर्गत मथुरा में अनेक धार्मिक भवनों का निर्माण हुआ परन्तु मध्यकालीन मुस्लिम शासकों के सानिध्य में मंदिर निर्माण की जिस शैली का विकास हुआ वह सर्वथा अन्य वास्तु शैलियों से भिन्न रही। परिणामत: पूर्व में जिस प्रकार मुस्लिम वास्तुकला पर हिन्दू तत्वों का आवरण पाया गया, ठीक उसी प्रकार इन मंदिरों पर भी मुस्लिम वास्तुकला की छाप दिखाई देती है। इस सन्दर्भ में 'मदन मोहन मंदिर', 'जुगलकिशोर मंदिर' तथा 'राधा गोविन्द मंदिर' इत्यादि प्रमुख हैं।

मथुरा, उत्तर प्रदेश के उत्तरी सीमा प्रान्त पर यमुना नदी के किनारे स्थित है। इसकी उत्तरी सीमा हरियाणा तथा दक्षिणी सीमा राजस्थान से संलग्न है। दिल्ली से मथुरा दक्षिण-पूर्व में लगभग 145 कि. मी. (90 मील) तथा आगरा से यह 55 कि. मी. (34 मील) की दूरी पर उत्तर में स्थित है। मुख्य भाषा के रूप में यहाँ हिंदी भाषा का प्रयोग होता है जबकि सामान्य सम्प्रेषण हेतु ब्रजभाषा का प्रचलन है। राजमार्ग NH 19 पर स्थित होने के कारण मथुरा सड़क परिवहन द्वारा तथा रेल मार्ग से भी सहज रूप में पंहुचा जा सकता है।

वस्तुत: मथुरा एक प्राचीन एवं धार्मिक नगरी है जो कि विशेष रूप से वैष्णव धर्म के प्रमुख देवता 'वासुदेव कृष्ण' के जन्म से सम्बंधित है। वैष्णव धर्म के अतिरिक्त अन्य प्राचीन धर्म जैसे जैन तथा बौद्ध धर्म का भी मथुरा प्रमुख स्थल रहा है । इन सभी धर्मों को इस पावन स्थली में न केवल आश्रय ही प्राप्त हुआ, अपितु इन सभी के विकास में भी मथुरा का महत्वपूर्ण योगदान है। पुराणों के मतानुसार मोक्षगामी सप्त-पुरियों में गणना होने के कारण मथुरा धार्मिक पर्यटन का विशेष केंद्र तो है ही साथ ही 'गोल्डन ट्रायंगल' (दिल्ली-आगरा-जयपुर) मार्ग पर स्थित होने के कारण यह विदेशी पर्यटकों के आगमन का भी प्रमुख स्थल है। 'कृष्ण जन्मभूमि', 'मथुरा संग्रहालय' तथा 'गिर्राज' पर्वत के अतिरिक्त वृन्दावन के अनेकश: मंदिर वहाँ विशेष रूप से दर्शनीय हैं।

सिन्धु घाटी सभ्यता के विघटन के बाद आर्य जाति (उत्तर भारत में) नगरीय सभ्यता को त्याग कर ग्रामीण ईकाइयों में परिवर्तित हो गई। आर्यों ने नदियों को यातायात हेतु तथा उनके किनारों को रहने हेतु प्रयुक्त समझा। मथुरा भी इस प्रकार के स्थलों में से एक था जो कि वर्तमान में यमुना नदी के किनारे स्थित है। इस क्षेत्र का प्रारम्भिक उदाहरण 16 महाजनपद काल से प्राप्त होता है जिसमें शूरसेन राज्य की राजधानी मथुरा बताई गयी है। पुरातात्त्विक अवशेष इसकी उपस्थिति वैदिककाल से मानते हैं जहाँ साक्ष्यों के रूप में PGW तथा NBPW संस्कृति वाले मृदभांड प्राप्त होते हैं। मौर्यकाल में मथुरा के परखम ग्राम से प्राप्त यक्ष-यक्षिणी की आदमकद मूर्तियाँ भारतीय कला की विशेष उपलब्धियां हैं। प्राचीनकाल में मथुरा एक मुख्य व्यापारिक क्षेत्र के रूप में विकसित हो चुका था जो कि भारत के मुख्य मार्गों द्वारा रेशम मार्ग से जुड़ा हुआ था। रेशम मार्ग वस्तुत: प्राचीन काल का वह मार्ग था जो पूर्वी देशों को पश्चिमी देशों से जोड़ता था और जहाँ व्यापारी अपनी वस्तुओं का एक दूसरे देशों के साथ आदान-प्रदान करते थे।

कुषाण शासक जिन्हें 'इंडो-शिथियन' या 'श्वेत हुण'

बलराम शर्मा, शोध छात्र, कला इतिहास एवं पर्यटन विभाग, कला संकाय, बी. एच. यू.
ई-मेल. balramsharmaind@icloud.com

इत्यादि नामों से जाना जाता है, वस्तुत: बाहरी जाति से सम्बंधित थे तथा जिनकी दो प्रमुख राजधानियों में मथुरा एवं गांधार थीं । गांधार क्षेत्र मुख्यत: बौद्ध कला से सम्बंधित था वहीं मथुरा की कला बौद्ध धर्म, जैन धर्म एवं ब्राह्मण धर्म तीनों से ही सम्बंधित रही। इस काल में मूर्तिकारों को न केवल मूर्ति निर्माण हेतु नवीन विषय मिले, अपितु उन्होंने कला कर्म में भी अपनी गहरी रुचि भी दिखाई। इसी काल में विष्णु, सरस्वती, बोधिसत्व, बुद्ध, तीर्थकर, नाग, यक्ष तथा अन्य देवताओं की विशालकाय प्रतिमाओं का निर्माण हुआ तथा उन्हें साँची, सारनाथ, कोशाम्बी, अवस्ती, पंजाब इत्यादि स्थलों पर भेजा गया। मूर्ति निर्माण की इस परंपरा में मथुरा के शिल्पियों ने पूर्वकालिक साँची एवं भरहुत कला की बारीकियाँ पकड़ी तथा उसमें आध्यात्मिक तत्त्वों का समावेश किया। इस प्रकार हम देखते है कि मथुरा की तात्कालीन मूर्तिकला रूपमाधुर्य, भावभंगिमाएँ, वस्त्रालंकरण से सुशोभित होने के साथ-साथ उनके मुखमंडल पर आध्यात्मिक भाव की नितांत प्रस्तुति प्राप्त होती है।

तदुपरान्त वास्तुकला के क्षेत्र में मथुरा से दो प्राचीन जैन स्तूपों के अवशेष प्राप्त हुए हैं जिनमें पहला शुंगकालीन तथा दूसरा कुषाणकालीन है। शुंगकालीन स्तूप पूर्णत: नष्ट हैं जबकि कुषाणकालीन स्तूप के अवशेष कंकाली टीला नामक स्थल से प्राप्त हुए हैं। ग्रंथों में इसी कंकाली टीले को देव निर्मित स्तूप की संज्ञा दी गयी है जिससे इसकी तत्कालीन प्रसिद्धि का प्रमाण मिलता है। वस्तुत: प्राचीन काल में स्तूप निर्माण एक विशेष प्रकार की धार्मिक वास्तु संरचना थी जिसे विशिष्ट संतों एवं महान पुरुषों की अस्थियों को संरक्षित करने तथा उन पर धार्मिक कर्म करने हेतु बनवाया जाता था। ह्वेनसांग, जो कि एक चीनी यात्री था तथा 627-643 ई. तक भारत में रहा, ने अपने यात्रा विवरण में मथुरा के अंतर्गत 20 बौद्ध विहारों तथा 5 मंदिरों का विवरण दिया है।

मथुरा के अन्य भवनों में मध्यकालीन मंदिरों की संरचना प्रमुख है जिन्हें मुगल शासकों के संरक्षण में बनाया गया। इस प्रकार के विशाल मंदिरों में 'गोविन्द देव मंदिर' तथा 'श्रीजी मंदिर' प्रमुख हैं। यह दोनों ही मंदिर मुगल शासक अकबर के समकालीन है। गोविन्द देव मंदिर जिसे राधा गोविन्द मंदिर नाम से भी जाना जाता है, लाल प्रस्तर से निर्मित है। मंदिर का निर्माण राजा मानसिंह ने बादशाह अकबर के सहयोग से 1590 ई. में करवाया। यह मंदिर नागर शैली का एक अद्‌भुत उदाहरण है तथा अपने मूल स्वरूप में गुजराती तथा मुस्लिम वास्तु शैली से प्रभावित है।

इस क्रम में दूसरा मंदिर 'श्रीजी' या राधारानी का है जिसे पहले राजा वीर सिंह ने तथा बाद में नारायण भट्ट ने राजा तोडर मल (जो कि अकबर बादशाह के दरबार में गवर्नर था) की सहायता से बनवाया। यह मंदिर लाल प्रस्तर से निर्मित है तथा इसमें हिन्दू एवं मुस्लिम वास्तु कला का सुंदर समन्वय स्थापित है।

इसी क्रम में अन्य भवनों के अंतर्गत 'जुगल किशोर मंदिर', 'मदन मोहन मंदिर' तथा 'राधा रमण मंदिर' प्रमुख है। जुगल किशोर मंदिर बादशाह जहाँगीर के समय 1627 ई. में बना। मंदिर का सम्मुख भाग व दरवाजा मुगल वास्तु कला से प्रभावित है तथा मेहराब युक्त है। मंदिर की दोनों भुजाओं में आले तथा उनके ऊपरी भाग में एक अलंकृत रेखा है। जुगल किशोर मंदिर की मुख्य विशेषता इसका शिखर है जो कि मुगल कालीन मीनारों की तकनीक तथा उनके अलंकरण से प्रभावित है। शिखर के ऊपरी भाग में आम्लक स्थित है तथा यह मीनारों के सदृश्य कई खंडों में विभक्त है।

'मदन मोहन मंदिर' औरंगजेब के समय मुल्तान के एक व्यापारी रामदास ने बनवाया था। वास्तु की संपूर्ण संरचना लाल प्रस्तर की है तथा यह मुख्यत: तीन भागों में विभक्त है, इसके पहले भाग में शिखरयुक्त संरचना है जो क्रमश: मंडप एवं गर्भगृह हैं तथा एक कक्षनुमा मंडप इसकी विपरीत दिशा में द्रविड़ शैली में निर्मित है। मदन मोहन मंदिर का शिखर भी उपरोक्त जुगल किशोर मंदिर के समान आगरा की मुस्लिम वास्तु कला से प्रभावित है। इसके शिखर भाग में आम्लक तथा मूल शिखर मीनारों के समान पांच भागों में विभक्त है। मंदिर की मूल संरचना में मुस्लिम तत्वों के साथ-साथ उड़ीसा वास्तु शैली का भी समन्वय स्थापित है। इन मंदिरों के अतिरिक्त 'हरिदेव मंदिर' तथा 'कुसुम सरोवर' इत्यादि भवन भी इस शृंखला में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

निष्कर्षत: भारतीय कला की अविछिन्न परंपरा में मथुरा शिल्प एवं वास्तुकला का महत्वपूर्ण योगदान है। वहाँ के प्रवीण कला साधकों ने प्राचीन धर्मो से सम्बंधित अनेक देवी- देवताओं की प्रारंभिक प्रतिमाओं का निर्माण किया तथा भारतीय कला के पूर्वकालिक कठोर तत्वों को त्यागकर उसमें सरल एवं सजीव रूपाकारों का विकास किया। इसी प्रकार मध्यकाल में भी जिन मंदिरों का निर्माण मथुरा क्षेत्र के अंतर्गत हुआ उनमें प्राचीन हिन्दू वास्तु शैली के साथ-साथ मुस्लिम तत्वों का प्रभाव भी स्पष्टत: दिखाई देता है जिस कारण ये मंदिर वास्तु सम्पूर्ण भारत के मंदिरों से पृथक रूप धारण किये हुए हैं। अर्थात् भारतीय कला इतिहास से सम्बंधित अध्ययन की मूल सामग्री प्रकट करने तथा इतिहास के शुद्ध तत्वों को जानने में सहायक मथुरा के शिल्प एवं भवन महत्त्वपूर्ण हैं। उनका का संरक्षण अत्यंत ही आवश्यक है।

1. गोविन्द देव मंदिर (वृन्दावन, मथुरा)
2. मदन मोहन मंदिर (वृन्दावन, मथुरा)
3. कुसुम सरोवर (गोवर्धन, मथुरा)
4. जुगल किशोर मंदिर (वृन्दावन, मथुरा)

ग्रन्थ सूची :

1. Agrawal, V.S. (1966) Bhartiya Kala, First Edition, Varanasi : Prithvi Prakash.
2. Brown, P. (1968) Indian Architecture : Islamic Period, Fifth Edition, Bombay : D.B. Taraporevala Sons & Co. Pvt. Ltd.
3. Fergusson, J. (2012) History of Indian and EasternArchitecture, Vol. – 2nd, Delhi : DK Publisher and Distributors.

वेब साईट सूची :

1. https://mathura-nic-in/ , 03-06-2020
2. https://mathuratourism-in/ , 13-06-2020